

रोजगार नहीं, ये है शिक्षा का असली मकसद! कुलपति का बड़ा बयान

वर्षिय सूची (Table of Contents):

- >> आरडीएस कॉलेज में भारतीय ज्ञान परंपरा पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का भव्य आयोजन...
- >> सभागार में प्रबुद्ध वचिारकों का समागम...
- >> केवल रोजगार नहीं, बल्कि मानव का समग्र विकास और चरतिर निर्माण है शिक्षा का मूल उ...
- >> कुलपति प्रो. दनिश चंदर राय के मुख्य वचिार...
- >> चरतिर निर्माण पर वशिष जोर...
- >> जीवन में अनुशासन और नैतिक मूल्य ही सफलता का असली आधार...
- >> अनुशासन से गढता है उज्ज्वल भवषिय...
- >> औपनिवेशिक काल का प्रभाव खंडति शिक्षा व्यवस्था और समकालीन चुनौतियां...
- >> औपनिवेशिक काल की काली छाया...
- >> समकालीन परिप्रेक्ष्य में बदलाव की जरूरत...
- >> समन्वय के तत्व से प्रकट होती है भारतीय ज्ञान परंपरा...
- >> ज्ञान की अवरिल गंगा का स्वरूप...
- >> वविधिता में छपी एकता...
- >> शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास और आरडीएस कॉलेज की सराहनीय संयुक्त पहल...
- >> अकादमिक विकास के नए मार्ग...
- >> आधुनिक विज्ञान-तकनीक के साथ सांस्कृतिक गौरव का संरक्षण जरूरी...
- >> प्रौद्योगिकी और परंपरा का संतुलन...
- >> नषिकर्ष...
- >> महत्वपूर्ण प्रश्न और उत्तर...

मुजफ्फरपुर के प्रतिष्ठित आरडीएस कॉलेज में भारतीय शिक्षा दविस के पावन अवसर पर एक भव्य राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस वशिष संगोष्ठी का मुख्य वषिय भारतीय ज्ञान परंपरा: शिक्षा, संस्कृति एवं समकालीन परिप्रेक्ष्य रखा गया था। कार्यक्रम में शिक्षा जगत की कई जानी-मानी हस्तियों ने शरिकत की और वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सुधार के साथ-साथ पारंपरिक मूल्यों को अपनाने पर जोर दिया।

इस वचिार-मंथन सत्र के दौरान शिक्षा के वभिनिन आयामों, चरतिर निर्माण, और आधुनिक तकनीकी युग में हमारी गौरवशाली संस्कृति के संरक्षण जैसे महत्वपूर्ण बढिुओं पर गहन चर्चा की गई। देश में चल रहे वभिनिन बदलावों और शिक्षा के स्तर को समझने के लिए आप हमारी वेबसाइट पर अन्य महत्वपूर्ण अपडेट्स भी देख सकते हैं, जैसे कभिरतीय नौसेना MR Result 2024की ताजा जानकारी।

आरडीएस कॉलेज में भारतीय ज्ञान परंपरा पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

मुजफ्फरपुर स्थिति आरडीएस कॉलेज का कृष्ण सभागार गुरुवार को उस समय वैचारिक ऊर्जा से भर गया, जब वहां एकदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की शुरुआत हुई। इस गरमिमयी कार्यक्रम का आयोजन कॉलेज की आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (IQAC) और शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, उत्तर बहिर प्रांत के संयुक्त तत्वावधान में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

सभागार में प्रबुद्ध वचिारकों का समागम

>> आयोजक संस्था: आरडीएस कॉलेज आईक्यूएसी (IQAC) एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास।

>> मुख्य केंद्र: भारतीय ज्ञान परंपरा को समकालीन समाज और आधुनिक शिक्षा से जोड़ना।

>> सार्थक प्रयास: शिक्षा जगत के विशेषज्ञों द्वारा प्राचीन मूल्यों के व्यावहारिक क्रियान्वयन पर चर्चा।

कार्यक्रम के दौरान पूरे परिसर में शिक्षा और संस्कृति के समन्वय की गूँज दखिाई दी, जहां वक्ताओं ने वर्तमान पीढ़ी को सही दशिा दखिाने के लिए ऐसे आयोजनों को अत्यंत आवश्यक और समय की मांग बताया।

केवल रोजगार नहीं, बल्कि मानव का समग्र विकास और चरतिर निर्मा

संगोष्ठी को मुख्य वक्ता के रूप में संबोधति करते हुए बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर बहिर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. दनिश चंद्र राय ने शिक्षा के वास्तविक अर्थ को रेखांकति किया। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि शिक्षा का मूल उद्देश्य केवल डिग्री हासलि करना या रोजगार पाना नहीं होना चाहिए, बल्कि यह व्यक्ति के भीतर मानवीय गुणों को जगाने का साधन है।

कुलपति प्रो. दनिश चंद्र राय के मुख्य वचिार

कुलपति ने अपने संबोधन में समग्र विकास (Holistic Development) को शिक्षा का प्राण बताया। उनका मानना है कि जब तक शिक्षा चरतिर निर्माण में सहायक नहीं होती, तब तक वह समाज के लिए पूर्ण रूप से कल्याणकारी नहीं बन सकती। उन्होंने युवाओं से अपील की कि वे केवल आर्थिक प्रगतिके पीछे न भागें, बल्कि एक आदर्श नागरिक बनने का संकल्प लें।

चरतिर निर्माण पर विशेष जोर

प्रो. राय ने कहा कि वर्तमान समय में नैतिक शिक्षा की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ गई है। आधुनिकता की दौड़ में हमें अपनी जड़ों से जुड़े रहना होगा। चरतिरवान समाज ही राष्ट्र को उन्नतिके शखिर पर ले जा सकता है, इसलिए शिक्षण संस्थानों को इस दशिा में विशेष कार्य योजना (Action Plan) तैयार करनी चाहिए।

जीवन में अनुशासन और नैतिक मूल्य ही सफलता का असली आधार

सफलता के रहस्यों पर प्रकाश डालते हुए संगोष्ठी में अनुशासन की भूमिका को सर्वोपरि माना गया। कुलपति प्रो. दनिश चंद्र राय ने वृद्धता से कहा कि जीवन के हर क्षेत्र में अनुशासन ही सफलता का एकमात्र मूलमंत्र है। बिना अनुशासन के कोई भी समाज या राष्ट्र प्रगति की राह पर आगे नहीं बढ़ सकता।

अनुशासन से गढ़ता है उज्ज्वल भवष्य

>> सफलता की कुंजी: नियमिता, दैनिकता, कर्तव्यों के प्रतिनिष्ठा और आत्म-नियंत्रण ही व्यक्तियों को महान बनाते हैं।

>> नैतिक मूल्यों का समावेश: ईमानदारी, परोपकार और बड़ों के प्रति सम्मान जैसे मूल्य हमारी धरोहर हैं।

>> युवाओं के लिए संदेश: छात्र जीवन में अनुशासन का पालन करने वाले युवा ही भवष्य में देश का नेतृत्व करते हैं।

जैसे खेल के मैदान में अनुशासन से बड़ी जीत हासिल होती है, ठीक वैसे ही जीवन में भी नियमों का पालन जरूरी है। यदि आप खेलकूद की खबरों में रुचि रखते हैं, तो एशिया कप से जुड़ी यह विशेष रिपोर्ट अवश्य पढ़ें: भारत ने पाकिस्तान को रोड़ा और जानें कैसे भारतीय टीम ने मैदान पर परचम लहराया।

औपनिवेशिक काल का प्रभाव: खंडित शिक्षा व्यवस्था और समकालीन चु

त्रिपुरा केंद्रीय विश्वविद्यालय के साहित्य संकाय के अध्यक्षता एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय भाषा मंच के सहसंयोजक प्रो. वनिद कुमार मशिर ने संगोष्ठी में इतिहास के पन्नों को खोलते हुए औपनिवेशिक मानसिकता पर कड़ा प्रहार किया। उन्होंने वस्तुतः से समझाया कि कैसे विदेशी शासन ने भारत की मौलिक ज्ञान परंपरा को नष्ट करने की साजिश रची थी।

औपनिवेशिक काल की काली छाया

प्रो. मशिर के अनुसार, ब्रिटिश हुकूमत और उनके द्वारा लागू की गई मैकाले की शिक्षा नीतिका एकमात्र उद्देश्य हमारी पारंपरिक समृद्ध शिक्षा व्यवस्था को खंडित करना था। उन्होंने कहा कि उस काल की काली छाया ने ऐसे लोगों को तैयार किया जो केवल मानसिक रूप से गुलाम थे और अपनी ही संस्कृति को हेय दृष्टि से देखते थे।

समकालीन परिप्रेक्ष्य में बदलाव की जरूरत

आज आजादी के इतने वर्षों बाद भी हमारे सामने अपनी शिक्षा व्यवस्था को पूरी तरह भारतीय रंग में ढालने की समकालीन चुनौती है। नई शिक्षा नीति (NEP) के माध्यम से इस दिशा में नवीनतम अपडेट (Latest Update) और प्रयास जारी है, ताकि विद्यार्थियों को अपनी भाषा और संस्कृति के प्रति गौरव की अनुभूति कराई जा सके।

समन्वय के तत्व से प्रकट होती है भारतीय ज्ञान परंपरा

वश्वविद्यालय के महाविद्यालय नरीक्षक प्रो. राजीव कुमार ने भारतीय ज्ञान परंपरा की अनूठी विशेषता को बेहद खूबसूरत उदाहरण के माध्यम से प्रस्तुत किया। उन्होंने इसकी तुलना भारत की जीवनदायिनी नदी गंगा से की, जो विविधता में एकता का सबसे बड़ा प्रतीक है।

ज्ञान की अवरिल गंगा का स्वरूप

प्रो. राजीव कुमार ने कहा कि जिस प्रकार देश के कोने-कोने से अनेक छोटी-बड़ी धाराएं मलिकर और आपस में समाहित होकर पवित्र गंगा का विशाल स्वरूप लेती है, ठीक उसी प्रकार समन्वय और समावेश के अद्भुत तत्व से हमारी भारतीय ज्ञान परंपरा प्रकट होती है। यह परंपरा किसी एक विचार तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें सबको साथ लेकर चलने का भाव समाहित है।

विविधता में छपि एकता

- >> सद्भाव और समावेशन: प्राचीन भारतीय दर्शन हमेशा से विचारों के आदान-प्रदान और समन्वय का समर्थक रहा है।
- >> ज्ञान का विस्तार: विज्ञान, अध्यात्म, गणित और कला का अनूठा संगम ही सनातन ज्ञान की पहचान है।
- >> वैश्विक दृष्टिकोण: वसुधैव कुटुंबकम की भावना के साथ पूरी दुनिया को अपना परिवार मानना ही इस परंपरा का मूल है।

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास और आरडीएस कॉलेज की सराहनीय संयु

आरडीएस कॉलेज के प्राचार्य प्रो. शशभूषण कुमार ने कार्यक्रम की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए आयोजकों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय और महाविद्यालय के स्तर पर भारतीय ज्ञान परंपरा को बढ़ावा देने के लिए लगातार सार्थक और रचनात्मक आयोजन किए जा रहे हैं, जो शिक्षा के स्तर को सुधारने में मलि का पत्थर साबित होंगे।

अकादमिक विकास के नए मार्ग

इस संगोष्ठी का कुशल संचालन डॉ. भगवान कुमार द्वारा किया गया, जिन्होंने सभी वक्ताओं के वचारों को आपस में परीने का बेहतरीन कार्य किया। कॉलेज प्रशासन ने इस बात की पुष्टि की है कि भविष्य में भी ऐसे राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आयोजित किए जाएंगे और उनकी पूरी सूची (List) व पीडीएफ (PDF) वविरण छात्रों के शैक्षणिक लाभ के लिए उपलब्ध कराए जाएंगे।

वभिन्न प्रकार की शैक्षणिक गतिविधियों और परीक्षाओं की तैयारी कर रहे छात्र देश के अलग-अलग राज्यों के परीक्षा पैटर्न को समझने के लिए हमारी वेबसाइट के माध्यम से अपनी स्थिति (Status) को जांच (Check) सकते हैं, जैसे कि हाल ही में जारी किए गए अभियान परीक्षा 2025 के आधिकारिक परिणाम की घोषणा की जा चुकी है।

आधुनिक विज्ञान-तकनीक के साथ सांस्कृतिक गौरव का संरक्षण जरूरी

संगोष्ठी का एक मुख्य नष्कर्ष यह भी रहा कि वर्तमान युग में विज्ञान और तकनीक (Science Technology) की उपेक्षा नहीं की जा सकती। हमें दुनिया के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने के लिए अत्याधुनिक आविष्कारों और डिजिटल माध्यमों को अपनाना ही होगा, लेकिन अपनी मूल तासीर को खोकर नहीं।

प्रौद्योगिकी और परंपरा का संतुलन

कुलपति ने स्पष्ट किया था कि हमें वैज्ञानिक अनुसंधान और सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर हमेशा आगे रहना है। परंतु, इस विकास क्रम में हमें अपने नैतिक मूल्यों, जीवन आदर्शों और गौरवशाली सांस्कृतिक वरिसत को पीछे नहीं छोड़ना है। असली प्रगति वही है जहां आधुनिक मस्तषिक हो और दलि भारतीय हो।

नष्कर्ष

मुजफ्फरपुर के आरडीएस कॉलेज में आयोजित यह राष्ट्रीय संगोष्ठी इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि आज भारत अपनी प्राचीन ज्ञान संपदा को पुनर्जीवित करने के लिए पूरी तरह तैयार है। शिक्षा का असली उद्देश्य केवल आजीविका कमाना नहीं, बल्कि एक संवेदनशील, अनुशासित और चरित्रवान मनुष्य का निर्माण करना है। जब हमारी युवा पीढ़ी आधुनिक विज्ञान के साथ-साथ अपनी समृद्ध संस्कृति और नैतिक मूल्यों को संजोकर आगे बढ़ेगी, तभी भारत वास्तविक रूप से विश्व गुरु के पद पर पुनः आसीन हो सकेगा।

महत्वपूर्ण प्रश्न और उत्तर

आरडीएस कॉलेज के कृष्ण सभागार में भारतीय ज्ञान परंपरा: शिक्षा, संस्कृति एवं समकालीन परिप्रेक्ष्य विषय पर एकदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का सफल आयोजन किया गया था।

कुलपति प्रो. दनिश चंद्र राय के अनुसार शिक्षा का मूल उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना नहीं, बल्कि मनुष्य का समग्र विकास (Holistic Development) और नैतिक चरित्र का निर्माण करना है।

इस भव्य कार्यक्रम का आयोजन आरडीएस कॉलेज की आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (IQAC) और शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, उत्तर बहिर प्रांत के संयुक्त तत्वावधान में किया गया था।

प्रो. वनीद कुमार मशिर ने कहा कि औपनिवेशिक काल की काली छाया ने भारत की मूल शिक्षा व्यवस्था को पूरी तरह से खंडित कर दिया था, जिसका मुख्य उद्देश्य केवल मानसिक रूप से गुलाम वद्वेषक पैदा करना था।

उन्होंने कहा कि जिस तरह अनेक छोटी-बड़ी जलधाराएं मलिकर गंगा नदी का विशाल और पवित्र स्वरूप बनाती हैं, ठीक उसी तरह विभिन्न विचारों के समन्वय के तत्व से ही हमारी भारतीय ज्ञान परंपरा प्रकट होती है।

कुलपति प्रो. दनिश चंद्र राय ने अपने व्याख्यान में स्पष्ट रूप से कहा कि जीवन में कड़े अनुशासन का पालन करना ही व्यक्तिगत और सामाजिक सफलता का असली मूलमंत्र है।

हाँ, संगोष्ठी में यह नषिकर्ष निकाला गया कि हमें आधुनिक विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में अवश्य आगे बढ़ना चाहिए, लेकिन अपनी मूल तासीर, नैतिक मूल्यों और गौरवशाली संस्कृति को कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

इस एकदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का कुशल और मंच-अनुकूल संचालन डॉ. भगवान कुमार द्वारा किया गया, जिसमें आरडीएस कॉलेज के प्राचार्य प्रो. शशभूषण कुमार की भी प्रमुख भूमिका रही।

हाँ, छात्र और शोधकर्ता इस संगोष्ठी के मुख्य बटुओं की सूची (List) और सत्रों का सारांश पीडीएफ (PDF) प्रारूप में कॉलेज के आधिकारिक पोर्टल पर जाकर ऑनलाइन देख (Check) सकते हैं।

नवीनतम अपडेट (Latest Update) के अनुसार, वर्तमान शिक्षा नीतियों का मुख्य ध्यान भारतीय ज्ञान परंपरा को मुख्यधारा के पाठ्यक्रम से जोड़ना है ताकि छात्र अपनी जड़ों और प्राचीन वैज्ञानिक सोच पर गर्व कर सकें।

यह गरमामयी एकदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी देश भर में मनाए जाने वाले भारतीय शिक्षा दिवस के विशेष अवसर पर आयोजित की गई थी।